वफ़ादारी

सोने के बछड़े का सबक़

wafādārī. sone ke bachhṛe kā sabaq

Faithfulness. The Lesson of the Golden Calf

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 9*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.

published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. R. Gunther https://freebibleimages.org/illustrations/ls-golden-calf/; https://freebibleimages.org/illustrations/ls-moses-commandments/; https://freebibleimages.org/illustrations/ls-moses-manna/; https://freebibleimages.org/illustrations/rg-moses-snake/; partially modified by OpenAI

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

ख़ुदा का अहद क़बूल करो 2

अपने बुत मत बनाओ 5

दूसरों की बेहतरी चाहो 9

ख़ुदा की हुज़ूरी के लिए तड़पते रहो 14

ख़ुदा की वफ़ादारी पर एतबार करो 16

तौरेत, ख़ुरूज 24; 32–34 21

जब ख़ुदा इसराईली क़ौम को मिसर से निकाल लाया तो उनके लिए ईमान का सफ़र शुरू हुआ। चलते चलते वह सीना पहाड़ पर पहुँच गए। वहाँ ख़ुदा ने उन्हें ज़िंदगी की राह दिखाई। जो उस पर चल पड़े उसके ख़ुदा और दूसरों के साथ ताल्लुक़ात बहाल रहते हैं। लेकिन सीना पहाड़ पर उन्हें एक और सबक़ भी सीखना था। वह क्या? वफ़ादारी का सबक़। हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, लेकिन अगर वफ़ादारी साथ न हो तो बाक़ी तमाम सबक़ बकवास हैं। सीना पहाड़ पर क़ौम ने वफ़ादारी के पाँच पहलू सीख लिए। पहला पहलू,

ख़ुदा का अहद क़बूल करो

जो वफ़ादार रहना चाहता है उसे पहले वह अहद क़बूल करना है जो ख़ुदा ने उसे पेश किया है। तौरेत में लिखा है,

> फिर उसने वह किताब ली जिसमें रब के साथ अहद की तमाम शरायत दर्ज थीं और उसे क़ौम को पढ़कर सुनाया। जवाब में उन्होंने कहा, "हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उसकी सुनेंगे।"

► **मूसा ने क्या किया?**

उसने क़ौम को अहद की शरायत पढ़कर सुनाया।

► **तब क़ौम ने क्या कहा?**

यह कि हम इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। फिर लिखा है,

> मूसा ने बासनों में से ख़ून लेकर उसे लोगों पर छिड़का और कहा, "यह ख़ून उस अहद की तसदीक़ करता है जो रब ने तुम्हारे साथ किया है और जो उसकी तमाम बातों पर मबनी है।"

► **मूसा ने लोगों पर क़ुरबानियों का ख़ून क्यों छिड़का?**

ख़ून से अहद की तसदीक़ हुई। अब कन्फ़र्म था कि इसराईली, अहद के मुताबिक़ चलेंगे। बिलकुल इसी तरह ख़ुदा ने बाद में ईसा मसीह की क़ुरबानी से एक नया अहद कन्फ़र्म किया जो पुराने अहद से कहीं बेहतर था।

► **अहद का क्या मतलब है?**

अहद का मतलब मुआहदा है। अहद दो पार्टियों के दरमियान कंट्रैक्ट है।

► **यहाँ अहद किन पार्टियों के दरमियान है?**

ख़ुदा और क़ौम के दरमियान। अब से इसराईली क़ौम ख़ुदा की क़ौम है।

► **हर अहद की शरायत भी होती हैं। इस अहद की शरायत क्या हैं?**

जो अहकाम मूसा ने लिखे थे वह अहद की शरायत हैं।

► **अगर वह इन शरायत के मुताबिक़ चलें तो क्या होगा?**

तब ख़ुदा उनके साथ होगा। वरना नहीं। फिर लिखा है,

> रब ने मूसा से कहा, "मेरे पास पहाड़ पर आकर कुछ देर के लिए ठहरे रहना। मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर मैंने अपनी शरीअत और अहकाम लिखे हैं और जो इसराईल की तालीमो-तरबियत के लिए ज़रूरी हैं।"
> मूसा अपने मददगार यशुअ के साथ चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया।

► **अब मूसा को कुछ मिलना था जो अहद पर मोहर लगाकर उसकी याद दिलाता रहेगा। वह क्या था?**

पत्थर की दो तख़्तियाँ जिन पर 10 अहकाम लिखे हुए थे। लिखा है,

> जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल छा गया। रब का जलाल कोहे-सीना पर उतर आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा। सातवें दिन रब ने बादल में से मूसा को बुलाया। रब का जलाल इसराईलियों को भी नज़र आता था। उन्हें यों लगा जैसा कि पहाड़ की चोटी पर तेज़ आग भड़क रही हो। चढ़ते चढ़ते मूसा बादल में दाख़िल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात रहा। [...] सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख़्तियाँ दीं। अल्लाह ने ख़ुद पत्थर की इन तख़्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं।

► **यह अहकाम पत्थर की दो तख़्तियों पर क्यों लिखी गई थीं?**

पत्थर की तख़्तियाँ देरपा हैं, और दस अहकाम उन पर कंदा किए गए थे। इसलिए वह हज़ारों साल के बाद भी पढ़े जा सकते थे।

लगता था कि अब से इसराईल का सुनहरी दौर शुरू होनेवाला है। ख़ुदा ने वादा किया था कि मैं तुम्हारे साथ हूँगा, क़ौम ने वादा किया था कि हम शरायत के मुताबिक़ चलेंगे, और तख़्तियों से अहद पर मोहर लगाया गया था। लेकिन अफ़सोस, ऐसा न हुआ। उतने में पहाड़ के दामन में सख़्त गड़बड़ हो चुकी थी। इस बात से हम वफ़ादारी का दूसरा पहलू सीखते हैं,

अपने बुत मत बनाओ

लिखा है,

> पहाड़ के दामन में लोग मूसा के इंतज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो गई। एक दिन वह हारून के गिर्द जमा होकर कहने लगे, "आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे

> आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।”

► **लोग क्यों बेचैन होने लगे?**

बहुत देर हो गई थी, और अब तक मूसा वापस नहीं आया था।

► **तब उन्होंने क्या किया?**

उन्होंने हारून को घेरकर कहा कि हमारे के लिए देवता बनाएँ जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें।

► **वह क्यों इतनी जल्दी से बेवफ़ा निकले?**

अफ़सोस, इनसान का दिल बुतों का कारख़ाना है। वह हमेशा इस ख़तरे में रहता है कि दूसरी चीज़ों को अपने बुत बनाए।

► **हम किन किन चीज़ों को अपने बुत बना लेते हैं?**

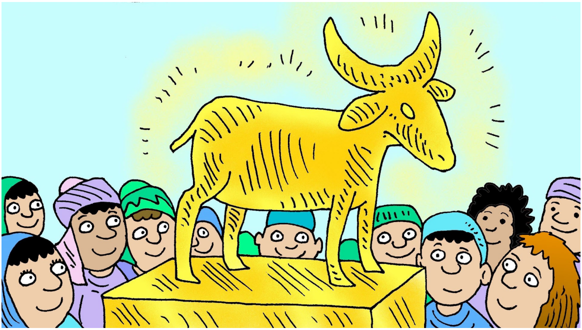

हर चीज़ जिससे हम पूरे दिल से लिपट जाते हैं हमारा ख़ुदा बन जाती है। यह कोई भी चीज़ हो सकती है—मसलन गाड़ी, अच्छी नौकरी, शानदार घर, शोहरत। लेकिन ख़ुदा फ़रमाता है कि मेरे साथ चिमटे रहो। इसराईली क़ौम को यह सीखना था। तब लिखा है,

> जवाब में हारून ने कहा, "आपकी बीवियाँ, बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतारकर मेरे पास ले आएँ।" सब लोग अपनी बालियाँ उतार उतारकर हारून के पास ले आए तो उसने यह ज़ेवरात लेकर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देखकर लोग बोल उठे, "ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।"

► **लोगों से तंग आकर हारून ने क्या बनाया?**

उसने ज़ेवरात से सोने का बछड़ा ढाल दिया।

► **यह देखकर लोगों ने क्या कहा?**

यह कहा कि ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।

► **वह क्यों इतनी जल्दी से ख़ुदा और मूसा को भूल सकते थे?**

लगता था कि ख़ुदा मूसा समेत पहाड़ पर ग़ायब हो गया था। दोनों दूर, बहुत दूर लग रहे थे। लेकिन मामला थोड़ा और पेचीदा था। लिखा है,

> जब हारून ने यह देखा तो उसने बछड़े के सामने क़ुरबानगाह बनाकर एलान किया, "कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।"

► **हारून ने क्या एलान किया?**

यह कि कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।

► **उसने सोने के बछड़े को क्या नाम दिया?**

रब। उसके ज़हन में सोने का बछड़ा ख़ुदा ही था। हारून इनकार नहीं कर रहा था कि ख़ुदा हमें मिसर से निकाल लाया है। उसकी बात और ख़राब थी। यह कि सोने का यह बछड़ा ख़ुदा का ज़ाहिरी नुमाइंदा है।

► **यह क्यों ग़लत था?**

इससे लोग अनदेखे ख़ुदा को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। इससे वह उसे अपने मक़ासिद के लिए इस्तेमाल करना चाहते थे। लेकिन ख़ुदा को यों पकड़ा नहीं जा सकता। फिर लिखा है,

> अगले दिन लोग सुबह-सवेरे उठे और भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। वह खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।

► **लोग क्या करने लगे?**

वह रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे। जब हम ख़ुदा से दूर हो जाते हैं तो एकदम बिगड़ने लगते हैं। वफ़ादारी का तीसरा पहलू,

दूसरों की बेहतरी चाहो

लिखा है,

> उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “पहाड़ से उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिसर से निकाल लाया बड़ी शरारतें कर रहे हैं। वह कितनी जल्दी से उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए मैंने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाकर उसे सिजदा किया है। उन्होंने उसे क़ुरबानियाँ पेश करके कहा है, ‘ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिसर से निकाल लाए हैं।’” अल्लाह ने मूसा से कहा, “मैंने देखा है कि यह क़ौम बड़ी हटधर्म है। अब मुझे रोकने की कोशिश न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेलकर उनको रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बना दूँगा।”

► **ख़ुदा ने क़ौम की बुतपरस्ती देखकर क्या फ़रमाया?**

यह कि अब मैं उन्हें मिटाकर तुझसे एक बड़ी क़ौम बना दूँगा।

► **क्या मूसा ने ख़ुदा की बात मान ली?**

नहीं। उसने एतराज़ करके अपनी क़ौम की सिफ़ारिश की।

► **इससे हम मूसा के बारे में क्या सीखते हैं?**

वह दूसरों की बेहतरी चाहता था। उसने बड़ी क़ौम बनने से इनकार किया, क्योंकि वह अपने लोगों से मुहब्बत रखता था। वह उनकी कमज़ोरियों से ख़ूब वाक़िफ़ था। फिर भी वह नहीं चाहता था कि उनका ख़ुदा से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाए। इसमें मूसा हमें ईसा मसीह

की याद दिलाता है जिसने दुनिया की बेहतरी के लिए अपनी जान दी। तब लिखा है,

> मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया जिसका एलान उसने कर दिया था बल्कि वह अपनी क़ौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

► **ख़ुदा मान गया। इससे हम उसके बारे में क्या सीखते हैं?**

वह बड़ा रहमदिल है। गो हम बार बार उसकी राहों से दूर हो जाते हैं तो भी वह हमारी हकलाती हुई मिन्नतों पर ध्यान देता है। बाद में भी इसराईल ने ज़ाहिर किया कि इनसान अपनी ताक़त से वफ़ादार नहीं रह सकता। तब ख़ुदा की ज़बरदस्त शफ़क़त उरूज तक पहुँच गई—उसने ईसा मसीह को इस दुनिया में भेज दिया ताकि हमें गुनाह की ग़ुलामी से छुड़ाए। फिर लिखा है,

मूसा मुड़कर पहाड़ से उतरा। उसके हाथों में शरीअत की दोनों तख़्तियाँ थीं। उन पर आगे-पीछे लिखा गया था। अल्लाह ने ख़ुद तख़्तियों को बनाकर उन पर अपने अहकाम कंदा किए थे।

उतरते उतरते यशुअ ने लोगों का शोर सुना और मूसा से कहा, "ख़ैमागाह में जंग का शोर मच रहा है!"

मूसा ने जवाब दिया, "न तो यह फ़तहमंदों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुओं की चीख़-पुकार। मुझे गानेवालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।"

► ख़ुशी मनानेवालों की आवाज़ें कैसी लग रही थीं?

पहले लग रहा था कि जंग हो रही है, फिर मालूम हुआ कि बेलगाम गाने का ज़ोर-शोर है। लिखा है,

जब वह ख़ैमागाह के नज़दीक पहुँचा तो उसने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते हुए देखा। बड़े ग़ुस्से में आकर उसने तख़्तियों को ज़मीन पर पटख़ दिया, और वह टुकड़े टुकड़े होकर पहाड़ के दामन में गिर गईं। मूसा ने इसराईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया। जो कुछ बच गया उसे उसने पीस पीसकर पाउडर बना डाला और पाउडर पानी पर छिड़ककर इसराईलियों को पिला दिया।

► **लोगों को देखकर मूसा ने तख़्तियों के साथ क्या किया?**

उसने उन्हें ज़मीन पर पटख़ दिया।

► **तख़्तियों को पटख़ देने से मूसा ने क्या ज़ाहिर किया?**

तख़्तियाँ अहद पर मोहर थीं। इनको पटख़ देने से ज़ाहिर हुआ कि ख़ुदा के साथ अहद टूट गया है। बेवफ़ाई से हमारा ख़ुदा से अहद टूट जाता है।

► **तब मूसा ने क्या किया?**

बुत के जो हिस्से जल सके उसने जला दिया, बाक़ी हिस्से को उसने पीस पीसकर पानी में छिड़क दिया और इसराईलियों को पिला दिया। अब वह देख और चख सकते थे कि बुत की क्या हैसियत है।

उस वक़्त ख़ुदा ने ख़ैमागाह में वबा फैलने दी। उसने मूसा को फ़रमाया,

> इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को लेकर जिनको तू मिसर से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिसका वादा मैंने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया है। […] लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा।

► **ख़ुदा ने मूसा से क्या फ़रमाया?**

क़ौम को उस मुल्क में ले जा जिसका वादा मैंने किया था। लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा। अब हम वफ़ादारी का चौथा पहलू सीखते हैं। यह कि

ख़ुदा की हुज़ूरी के लिए तड़पते रहो

लिखा है,

> जब इसराईलियों ने यह सख़्त अलफ़ाज़ सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने ज़ेवर न पहने।

► **ख़ुदा का फ़रमान सुनकर लोग क्या करने लगे?**

वह मातम करने लगे।

► **क्यों मातम करने लगे?**

वह ख़ुदा के बग़ैर चलने के लिए तैयार नहीं थे। वह ख़ुदा की हुज़ूरी के लिए तड़प रहे थे।

► **क्या आप ख़ुदा की हुज़ूरी के लिए तड़प रहे हैं?**

तब मूसा ख़ुदा से बोला,

> अगर तू ख़ुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न करना। अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी क़ौम को तेरा करम हासिल

> हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर क़ौमों से अलग और मुमताज़ हैं।

► **मूसा क्या बोला?**

उसने ज़िद करके रवाना हो जाने से इनकार किया। कहा कि तेरा साथ होना लाज़िम है। सिर्फ़ इसी से पता चलेगा कि हमें तेरा करम हासिल है, कि हम दूसरों से अलग और मुमताज़ हैं। कितनी प्यारी बात! हम अपनी दौलत और ख़ूबियों की वजह से दूसरों से अलग और मुमताज़ नहीं होते बल्कि इससे कि हमें ख़ुदा की मौजूदगी, उसका करम हासिल है। तब ख़ुदा ने मूसा से फ़रमाया,

> मैं तेरी यह दरख़ास्त भी पूरी करूँगा, क्योंकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।

► **क्या ख़ुदा मान गया?**

हाँ, एक बार फिर वह मान गया। वफ़ादारी का पाँचवाँ पहलू,

ख़ुदा की वफ़ादारी पर एतबार करो

तब ख़ुदा ने फ़रमाया,

> अपने लिए पत्थर की दो तख़्तियाँ तराश ले जो पहली दो की मानिंद हों। फिर मैं उन पर वह अलफ़ाज़ लिखूँगा जो पहली तख़्तियों पर लिखे थे जिन्हें तूने पटख़ दिया था। सुबह तक तैयार होकर सीना पहाड़ पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा।

► **ख़ुदा ने मूसा को एक अनोखी हिदायत दी। वह क्या?**

दो तख़्तियाँ तराशकर पहाड़ पर ले आ। तब मैं उन पर दुबारा दस अहकाम लिखूँगा।

► **यह क्यों अनोखी हिदायत है?**

तख़्तियाँ अहद पर मोहर थीं। मतलब है ख़ुदा दुबारा क़ौम के साथ अहद बाँधना चाहता था। तब मूसा नई तख़्तियाँ लेकर दुबारा पहाड़ पर चढ़ गया। लिखा है,

> जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब बादल में उतर आया और उसके पास खड़े होकर अपने नाम रब का एलान किया। मूसा के सामने से गुज़रते हुए उसने पुकारा, "रब, रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा। तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर। वह हज़ारों पर अपनी शफ़क़त क़ायम

> रखता और लोगों का क़ुसूर, ना-फ़रमानी और गुनाह माफ़ करता है। लेकिन वह हर एक को उसकी मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेंगे।”

► **जब ख़ुदा बादल में उतर आया तो उसने क्या किया?**

उसने अपने नाम रब का एलान किया।

► **क्या कहा?**

पहले, मैं रहीम और मेहरबान ख़ुदा हूँ जो तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर हूँ। दूसरे, मैं मुनासिब सज़ा देनेवाला भी हूँ। यों ख़ुदा के दो पहलू हैं—शफ़क़त और इनसाफ़।

► **ख़ुदा ने यह एलान क्यों किया?**

इससे उसने ज़ाहिर किया कि अब से मैं दुबारा तुम्हारे साथ हूँगा। लेकिन मैं तुम्हारा इनसाफ़ भी करूँगा। लिखा है,

> मूसा ने जल्दी से झुककर सिजदा किया। उसने कहा, “ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह क़ौम हटधर्म है, तो भी हमारा क़ुसूर और गुनाह माफ़ कर और बख़्श दे कि हम दुबारा तेरे ही बन जाएँ।”

► **यह एलान सुनकर मूसा ने क्या गुज़ारिश की?**

यह कि हमारे साथ चल। लिखा है,

तब रब ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधूँगा। तेरी क़ौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिज़े करूँगा जो अब तक दुनिया भर की किसी भी क़ौम में नहीं किए गए। पूरी क़ौम जिसके दरमियान तू रहता है रब का काम देखेगी और उससे डर जाएगी जो मैं तेरे साथ करूँगा। जो अहकाम मैं आज देता हूँ उन पर अमल करता रह।

► **ख़ुदा ने क्या जवाब दिया?**

यह कि मैं दुबारा अहद बाँधकर ऐसे मोजिज़े करूँगा जो अब तक दुनिया भर नहीं किए गए हैं।

इसके बाद मूसा शरीअत की दोनों तख़्तियों को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। यों इसराईल को ख़ुदा की वफ़ादारी ज़बरदस्त तरीक़े

से महसूस हुई। गो क़ौम बेवफ़ा निकली फिर भी ख़ुदा वफ़ादार रहा। इस सिलसिले में वफ़ादारी के 5 अहम पहलू ज़ाहिर हुए :

- **ख़ुदा का अहद क़बूल करो।**

  वह अहद क़बूल करो जो उसने ईसा मसीह के वसीले से हमसे बाँध लिया है। जो यह अहद क़बूल करे वह उसकी क़ौम में शामिल हो जाता है।

- **अपने बुत मत बनाओ।**

  बुत बनाने से यह क़ीमती अहद टूट जाता है।

- **दूसरों की बेहतरी चाहो।**

  मूसा ने दूसरों की सिफ़ारिश की। ईसा मसीह ने इससे बढ़कर अपनी जान दूसरों के लिए दी। अब वह रोज़ाना अपनी क़ौम की सिफ़ारिश करता है।

- **ख़ुदा की हुज़ूरी के लिए तड़पते रहो।**

  इसराईली बेवफ़ा निकले, लेकिन जब होश में आए तो ख़ुदा की हुज़ूरी के बग़ैर न रह सके।

- **ख़ुदा की वफ़ादारी पर एतबार करो।**

  इस दुनिया में रहते हुए हमारी वफ़ादारी नाक़िस तो रहेगी। लेकिन उसकी वफ़ादारी ठोस है—इतनी ठोस कि उसने ईसा मसीह दुनिया में भेज दिया ताकि हमें गुनाह से छुटकारा दे। आज भी हम उसकी सिफ़ारिश और वफ़ादारी पर एतबार कर सकते हैं।

तौरेत, ख़ुरूज 24; 32–34

रब इसराईल से अहद बाँधता है

तब मूसा ने क़ौम के पास जाकर रब की तमाम बातें और अहकाम पेश किए। जवाब में सबने मिलकर कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे।” तब मूसा ने रब की तमाम बातें लिख लीं। [...] फिर उसने वह किताब ली जिसमें रब के साथ अहद की तमाम शरायत दर्ज थीं और उसे क़ौम को पढ़कर सुनाया। जवाब में उन्होंने कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उसकी सुनेंगे।”

इस पर मूसा ने बासनों में से ख़ून लेकर उसे लोगों पर छिड़का और कहा, “यह ख़ून उस अहद की तसदीक़ करता है जो रब ने तुम्हारे साथ किया है और जो उसकी तमाम बातों पर मबनी है।”

पत्थर की तख़्तियाँ

रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास पहाड़ पर आकर कुछ देर के लिए ठहरे रहना। मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर मैंने अपनी शरीअत और अहकाम लिखे हैं और जो इसराईल की तालीमो-तरबियत के लिए ज़रूरी हैं।”

मूसा अपने मददगार यशुअ के साथ चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया। [...]

मूसा रब से मिलता है

जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल छा गया। रब का जलाल कोहे-सीना पर उतर आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा। सातवें दिन रब ने बादल में से मूसा को बुलाया। रब का जलाल इसराईलियों को भी नज़र आता था। उन्हें यों लगा जैसा कि पहाड़ की चोटी पर तेज़ आग भड़क रही हो। चढ़ते चढ़ते मूसा बादल में दाख़िल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात रहा। [...] सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख़्तियाँ दीं। अल्लाह ने ख़ुद पत्थर की इन तख़्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं। [...]

सोने का बछड़ा

पहाड़ के दामन में लोग मूसा के इंतज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो गई। एक दिन वह हारून के गिर्द जमा होकर कहने लगे, "आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।"

जवाब में हारून ने कहा, "आपकी बीवियाँ, बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतारकर मेरे पास ले आएँ।" सब लोग अपनी बालियाँ उतार उतारकर हारून के पास ले आए तो उसने यह

ज़ेवरात लेकर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देखकर लोग बोल उठे, “ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।” जब हारून ने यह देखा तो उसने बछड़े के सामने क़ुरबानगाह बनाकर एलान किया, “कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।” अगले दिन लोग सुबह-सवेरे उठे और भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाई। वह खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।

मूसा की शफ़ाअत

उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “पहाड़ से उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिसर से निकाल लाया बड़ी शरारतें कर रहे हैं। वह कितनी जल्दी से उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए मैंने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाकर उसे सिजदा किया है। उन्होंने उसे क़ुरबानियाँ पेश करके कहा है, ‘ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिसर से निकाल लाए हैं।’” अल्लाह ने मूसा से कहा, “मैंने देखा है कि यह क़ौम बड़ी हटधर्म है। अब मुझे रोकने की कोशिश न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेलकर उनको रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बना दूँगा।”

लेकिन मूसा ने कहा, “ऐ रब, तू अपनी क़ौम पर अपना ग़ुस्सा क्यों उतारना चाहता है? तू ख़ुद अपनी अज़ीम क़ुदरत से उसे मिसर से

निकाल लाया है। मिसरी क्यों कहें, ‘रब इसराईलियों को सिर्फ़ इस बुरे मक़सद से हमारे मुल्क से निकाल ले गया है कि उन्हें पहाड़ी इलाक़े में मार डाले और यों उन्हें रूए-ज़मीन पर से मिटाए’? अपना ग़ुस्सा ठंडा होने दे और अपनी क़ौम के साथ बुरा सुलूक करने से बाज़ रह। याद रख कि तूने अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से अपनी ही क़सम खाकर कहा था, ‘मैं तुम्हारी औलाद की तादाद यों बढ़ाऊँगा कि वह आसमान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें वह मुल्क दूँगा जिसका वादा मैंने किया है, और वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे।’” मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया जिसका एलान उसने कर दिया था बल्कि वह अपनी क़ौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

बुतपरस्ती के नतायज

मूसा मुड़कर पहाड़ से उतरा। उसके हाथों में शरीअत की दोनों तख़्तियाँ थीं। उन पर आगे-पीछे लिखा गया था। अल्लाह ने ख़ुद तख़्तियों को बनाकर उन पर अपने अहकाम कंदा किए थे।

उतरते उतरते यशुअ ने लोगों का शोर सुना और मूसा से कहा, “ख़ैमागाह में जंग का शोर मच रहा है!”

मूसा ने जवाब दिया, “न तो यह फ़तहमंदों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुओं की चीख़-पुकार। मुझे गानेवालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।”

जब वह ख़ैमागाह के नज़दीक पहुँचा तो उसने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते हुए देखा। बड़े ग़ुस्से में आकर उसने तख़्तियों को ज़मीन पर पटख़ दिया, और वह टुकड़े टुकड़े होकर पहाड़ के दामन में गिर गईं। मूसा ने इसराईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया। जो कुछ बच गया उसे उसने पीस पीसकर पाउडर बना डाला और पाउडर पानी पर छिड़ककर इसराईलियों को पिला दिया।

उसने हारून से पूछा, "इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुमने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में फँसा दिया?"

हारून ने कहा, "मेरे आक़ा। ग़ुस्से न हों। आप ख़ुद जानते हैं कि यह लोग बदी पर तुले रहते हैं। उन्होंने मुझसे कहा, 'हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।' इसलिए मैंने उनको बताया, 'जिसके पास सोने के ज़ेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।' जो कुछ उन्होंने मुझे दिया उसे मैंने आग में फेंक दिया तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।" [...]

अगले दिन मूसा ने इसराईलियों से बात की, "तुमने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा दे सकूँ।"

चुनाँचे मूसा ने रब के पास वापस जाकर कहा, “हाय, इस क़ौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। उन्होंने अपने लिए सोने का देवता बना लिया। मेहरबानी करके उन्हें माफ़ कर। लेकिन अगर तू उन्हें माफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में से मिटा दे जिसमें तूने अपने लोगों के नाम दर्ज किए हैं।”
रब ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़ उसको अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा गुनाह करता है। अब जा, लोगों को उस जगह ले चल जिसका ज़िक्र मैंने किया है। मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा। लेकिन जब सज़ा का मुक़र्ररा दिन आएगा तब मैं उन्हें सज़ा दूँगा।”
फिर रब ने इसराईलियों के दरमियान वबा फैलने दी, इसलिए कि उन्होंने उस बछड़े की पूजा की थी जो हारून ने बनाया था।
रब ने मूसा से कहा, “इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को लेकर जिनको तू मिसर से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिसका वादा मैंने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया है। [...] लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा। तुम इतने हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो ख़तरा है कि तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बरबाद कर दूँ।”
जब इसराईलियों ने यह सख़्त अलफ़ाज़ सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने ज़ेवर न पहने, क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, “इसराईलियों को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लमहा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो ख़तरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ। [...]

मूसा ने कहा, “अगर तू ख़ुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न करना। अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी क़ौम को तेरा करम हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर क़ौमों से अलग और मुमताज़ हैं।”

रब ने मूसा से कहा, “मैं तेरी यह दरख़ास्त भी पूरी करूँगा, क्योंकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।” […]

पत्थर की नई तख़्तियाँ

रब ने मूसा से कहा, “अपने लिए पत्थर की दो तख़्तियाँ तराश ले जो पहली दो की मानिंद हों। फिर मैं उन पर वह अलफ़ाज़ लिखूँगा जो पहली तख़्तियों पर लिखे थे जिन्हें तूने पटख़ दिया था। सुबह तक तैयार होकर सीना पहाड़ पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा। तेरे साथ कोई भी न आए बल्कि पूरे पहाड़ पर कोई और शख़्स नज़र न आए, यहाँ तक कि भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के दामन में न चरें।”

चुनाँचे मूसा ने दो तख़्तियाँ तराश लीं जो पहली की मानिंद थीं। फिर वह सुबह-सवेरे उठकर सीना पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था। उसके हाथों में पत्थर की दोनों तख़्तियाँ थीं। जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब बादल में उतर आया और

उसके पास खड़े होकर अपने नाम रब का एलान किया। मूसा के सामने से गुज़रते हुए उसने पुकारा, "रब, रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा। तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर। वह हज़ारों पर अपनी शफ़क़त क़ायम रखता और लोगों का क़ुसूर, ना-फ़रमानी और गुनाह माफ़ करता है। लेकिन वह हर एक को उसकी मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेंगे।"
मूसा ने जल्दी से झुककर सिजदा किया। उसने कहा, "ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह क़ौम हटधर्म है, तो भी हमारा क़ुसूर और गुनाह माफ़ कर और बख़्श दे कि हम दुबारा तेरे ही बन जाएँ।"
तब रब ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधूँगा। तेरी क़ौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिज़े करूँगा जो अब तक दुनिया भर की किसी भी क़ौम में नहीं किए गए। पूरी क़ौम जिसके दरमियान तू रहता है रब का काम देखेगी और उससे डर जाएगी जो मैं तेरे साथ करूँगा। जो अहकाम मैं आज देता हूँ उन पर अमल करता रह। [...]
इसके बाद मूसा शरीअत की दोनों तख़्तियों को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। [...] लेकिन उसने उन्हें बुलाया तो हारून और जमात के तमाम सरदार उसके पास आए, और उसने उनसे बात की। बाद में बाक़ी इसराईली भी आए, और मूसा ने उन्हें तमाम अहकाम सुनाए जो रब ने उसे कोहे-सीना पर दिए थे।